कूष्माण्डा माता कथा

कुष्मांडा देवी की आठ भुजाएं हैं, इसलिए इन्हें अष्टभुजा कहा जाता है। इनके सात हाथों में क्रमशः कमंडल, धनुष, बाण, कमल-पुष्प, अमृत से भरा कलश, चक्र और गदा धारण की जाती है। आठवें हाथ में सभी सिद्धियों और निधियों को देने वाली जप माला है। इस देवी का वाहन सिंह है और इन्हें कुम्हड़ा की बलि प्रिय है।

संस्कृति में एक कुण्ड को कुष्माण्ड कहा जाता है, इसलिए इस देवी को कुष्माण्डा कहा जाता है। इस देवी का वास सौरमंडल के भीतर लोक में है। सूर्यलोक में रहने की क्षमता केवल इन्हीं में है। इसलिए उनके शरीर का तेज और प्रकाश सूर्य के समान देदीप्यमान है। उनके तेज से दसों दिशाएं आलोकित हैं। उनकी महिमा ब्रह्मांड की सभी वस्तुओं और प्राणियों में व्याप्त है।

नवरात्रि के चौथे दिन शांत और पवित्र मन से इस देवी की पूजा करनी चाहिए। इससे भक्त के रोग और शोक का नाश होता है और उसे आयु, यश, बल और आरोग्य की प्राप्ति होती है। यह देवी बहुत ही कम सेवा और भक्ति से प्रसन्न होकर कृपा करती हैं। जो सच्चे मन से पूजा करता है वह आसानी से परम पद को प्राप्त कर लेता है। विधि-विधान से पूजा करने से भक्त को अल्प समय में ही सूक्ष्म कृपा का अनुभव होने लगता है।

pdfinbox.com

यह देवी आधे–अधूरे रोगों से मुक्त करती हैं और उन्हें सुख–समृद्धि और उन्नति प्रदान करती हैं। अंततः, भक्तों को इस देवी की पूजा करने के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए।

pdfinbox.com

pdfinbox.com